INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | JUNE - 2023

लोकसभा निर्वाचन 2019 में महिलाओं के मतदान व्यवहार की प्रवृत्तियाँ: पूर्वी चम्पारण लोकसभा क्षेत्र का एक विशेष अध्ययन

डॉ. दिनेश कुमार
सहायक प्राचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, अनुग्रह नारायण सिं हकॉलेज, बाढ़।

जन-आकांक्षाओं की पूर्ति के दृष्टिकोण से लोकतांत्रिक शासन प्रणाली सर्वोत्तम है। लोकतंत्र मानव के आधुनिक एवं जीवंत होने का प्रतीक है। इस शासन प्रणाली में आम आदमी को यह एहसास होता है कि अपनी दिशा और दशा तय करने में वह स्वयं भी निर्णायक भूमिका में है। वह अपनी इस भूमिका का निर्वाह चुनावों के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों को चुनकर करता है। वस्तुतः एक लोकतंत्र में शासन का समस्त ढाँचा निर्वाचन के आधार पर ही निर्मित किया जाता है। निर्वाचन के ही माध्यम से संसद और विधानमण्डलों का गठन होता है और सरकार बनती है। इसी निर्वाचन के माध्यम से जनता सरकार पर विविध प्रकार से नियंत्रण रखती है। मताधिकार नागरिको के हृदय में शासन के प्रति निष्ठा और भक्ति की भावना उत्पन्न करता है।

आज के बदलते भारतीय परिवेश में महिलाओं की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति विरोधाभासों से भरी हुई है। स्वाधीन भारत में महिला-सशक्तिकरण को राजनैतिक पोषण सुलभ हुआ है, जिसके फलस्वरूप राजनीतिक क्षितिज पर महिलाओं की भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे है, तथापि महिलाएँ राजनीतिक रूप से आज भी सुप्तावस्था में हैं या कहा जा सकता है कि पुरूष-प्रधान समाज ने उन्हें जागृत होने से रोक रखा है। आज भी एक सर्वमान्य महिला नेतृत्व का अभाव है जो समस्त भारत की महिलाओं में राजनैतिक चेतना का संचार कर सके।

बिहार अन्तर्विरोधों से भरा राज्य है। बिहारवासी उदारचरित्र होने के बावजूद मतदान के मामले में धर्म और जाति की सीमा में बंधे हैं। गरीबी और अशिक्षा मानों बिहार की अधिसंख्य आबादी का प्रर्याय बन गई है। इसका सीधा असर यहां की मतदाताओं के मतदान व्यवहार पर पड़ता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण महिलाएँ स्वतंत्र रूप से राजनीतिक निर्णय लेने में अक्षम है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उन्हें परिवार के मुखिया जो आमतौर पर पुरूष होते हैं, की इच्छा के अनुरूप ही अपने राजनीतिक निर्णय लेने पड़ते है। इसके पीछे अशिक्षा, महिलाओं की परिवार में कमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ-साथ हिंसा का भय भी परिवार के भीतर बना रहता है। परिणामस्वरूप मतदान में महिलाओं की भागीदारी आज भी औसत मतदान प्रतिशत से काफी कम है।

मतदान मनोवैज्ञानिक तत्वों से प्रेरित एक गुढ़ राजनीतिक प्रक्रिया है, जो अनेक तत्वों से प्रभावित होती है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि एक संसदीय क्षेत्र की मतदान प्रवृत्ति दूसरे संसदीय क्षेत्रों से भिन्न होती है। अतएव किसी एक क्षेत्र की मतदान-प्रवृत्ति के आधार पर कोई सामान्य (Comman) निष्कर्ष निकाल पाना संभव नहीं है। बिहार के परिप्रेक्ष्य में जब मतदान-प्रवृत्ति के प्रभावी कारकों का विश्लेषण किया जाता है, तो 'जातिवाद' सबसे प्रमुख तत्व के रूप में उभरता है। यद्यपि इस तत्व का प्रभाव भारतीय संघ के सभी राज्यों में है, किन्तु बिहार और उत्तर प्रदेश शुरू से ही जातिवाद के प्रयोगशाला रहे हैं।

सन 2014 में सोलहवीं लोकसभा एवं वर्ष 2019 में सत्रहवीं लोकसभा चुनाव में जातियों के टुटने के कारण एनडीए लगातार कार्यकाल के लिए भी भारी बहुमत से सत्ता पर काबिज हैं। मतदान प्रवृत्ति का दूसरा प्रमुख कारण मतदाताओं की आर्थिक स्थिति है। आमतौर पर देखा गया है कि आर्थिक स्थिति अच्छा रहने पर मतदाता सत्तारूढ़ दल के पक्ष में मतदान करता है अन्यथा शासक दल के विरूद्ध। मतदाताओं को प्रभावित करने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व 'नेतृत्व' अप्रैल-मई 2019 के चुनावों में दूबारा राष्ट्रीय गठबंधन को भारी बहुमत प्राप्त होना श्री नरेन्द्र मोदी का 5 वर्षों का कार्यकाल रहा है।

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में कुल 8049 उम्मीदवारों में 724 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं। कांग्रेस ने अपने कुल 423 उम्मीदवारों में से 54 महिला उम्मीदवार को टिकट दिया, तो वहीं भाजपा ने कुल 437 उम्मीदवारों में से 53 महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया। अन्य राजनीतिक दलों में, बहुजन समाज पार्टी ने 24, ममता की तृणमूल कांग्रेस ने 17, माकपा ने 10, भाकपा ने चार और राकपा ने एक महिला उम्मीदवार को मैदान में उतारा था। 17 लोकसभा चुनाव में अन्य राजनीतिक दलों एवं निर्दलीय महिला उम्मीदवारों की कुल संख्या 222 थी। जबकि 4 ट्रांसजेंडर ने भी निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़ा। बीजू जनता दल ने भी देश में एकमात्र ऐसी राजनीतिक दल है जिसने टिकट बंटवारे में 33 फीसदी सीट महिलाओं को दिया था यानि 7 महिला उम्मीदवार मैदान में उतारे थे।

17 वीं लोकसभा में सबसे अधिक 40 महिला उम्मीदवार बीजेपी के टिकट पर चुनाव जीतकर संसद पहुंचीं है। कांग्रेस पार्टी से केवल एक महिला उम्मीदवार सोनिया गांधी की ही रायबरेली से जीत हो पायी। भाजपा से केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने अमेठी में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को शिकस्त देकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। मोदी सरकार की केन्द्रीय मंत्रियों में अपनी लोकसभा सदस्यता बरकरार रखने वालों में मेनका गांधी सुल्तानपुर से और अनुप्रिया पटेल मिर्जापुर से (अपना दल) उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीती हैं। साथ ही बीजेपी उम्मीदवार हेमा मालिनी मथुरा से, प्रज्ञा ठाकुर भोपाल से, मीनाक्षी लेखी नई दिल्ली से, किरण खेर चंडीगढ़ से और रीता बहुगुणा जोशी इलाहाबाद से जीतने वाली प्रमुख भाजपा सांसद हैं। लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगातार बढ़ता जा रहा है। पहले चुनाव में सदन में केवल 5 प्रतिशत महिलाएँ थी। वर्तमान में यह संख्या बढ़कर 14.3 प्रतिशत हो गई हैं। लेकिन कई ऐसे नाम हैं जिसे हार मिली है, जैसे टीआरएस की के० कविता, पीडीपी की महबूबा मुफ्ती, समाजवादी पार्टी की डिंपल यादव और पूनम सिन्हा, रामपुर से बीजेपी की जया प्रदा, कांग्रेस की प्रिया दत्त और उर्मिला मातोंडकर और आसनसोल से तृणमूल कांग्रेस की मुनमुन सेन, सिलचर से सांसद कांग्रेस की सुष्मिता देव, सुपौल से सांसद कांग्रेस की रंजीत रंजन शामिल हैं। ओडिशा से बीजेडी से जीती चंद्राणी मुर्मू सबसे कम उम्र की सांसद है वो महज 25 साल की हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर महिला मतदाता सक्रिय हुई है विभिन्न चुनाव एजेन्सियों के सर्वेक्षण रिपोर्टों से जाहिर होता है कि महिला पूर्व चुनाव की अपेक्षा अधिक राजनीतिक समझ का परिचय दिया, और चुनाव परिणाम इस बात को स्पष्ट रूप से इंगित

करता है। राजनीतिक व्यवस्था में आया यह परिवर्तन महज पुरूष मतदाताओं के बल पर संभव नहीं था।'आधी आबादी' के योगदान के बिना इतना बड़ा परिवर्तन कदापि संभव नहीं था और यह महिलाओं की बदलती मतदान-प्रवृत्ति का परिचायक है।

साहित्य समीक्षाः

17वीं लोकसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में अबतक कई लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुँके हैं, परन्तु पूर्वी चम्पारण जिला के सन्दर्भ में महिलाओं के मतदान प्रवृत्ति से सम्बनिधत शोध कार्य नहीं हुये हैं। अंग्रेजी दैनिक "The Hindu" में प्रकाशित राजेश्वरी देश पाण्डेय का "Women vote in 2019" शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ। यह लेख राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति का अध्ययन तो करता है, परन्तु बिहार जैसे पिछड़े राज्य में महिलाओं की मतदान-प्रवृत्ति का विश्लेषण नहीं करता है। इसी प्रकार "The Economic and Political Weekly" के सितम्बर 2019 के अंक में "Loksanha Elections-The electrol verdict in Bihar" शीर्षक से शोध पत्र प्रकाशित हुआ। इस लेख में भी बिहार के सन्दर्भ में कोई अध्ययन नहीं है। इसी प्रकार "Asian Journal of Multi-Disciplinary studies" नामक Journal में "Trends in womens bahaviours " शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ लेकिन इस प्रस्तुत पत्र में महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों का भी उल्लेख नहीं किया गया है। संजय कुमार, संजीर आलम एवं धन्नजय जोशी ने "Journal of Indian School of Political Economy" नामक Journal में Caste Dynamic- Political process in Bihar" नामक लेख में महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति के अध्ययन का प्रयास किया है, लेकिन यह लेख महिला में मतदान प्रवृत्ति के कारकों को पूरी तरह विश्लेषित करने में सफल नहीं है। 'सहारा समय' में राजेश्वरी देश पाण्डेय ने अपने प्रकाशित लेख "Is there any women's constituency in Indian Elections? ने महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला है लेकिन इस लेख में महिलाओं की उभरते हुए मतदान प्रवृत्ति के प्रतिमानों पर बहुत अधिक बल नहीं दिया गया है।

शोध का उद्देश्यः

शोध कार्य में शोध उद्देश्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अन्तर्गत शोध कार्य से जुड़े प्रत्येक बिन्दुओं को प्रस्तुत किया जाता है, जिनका अध्ययन किया जाना है। प्रस्तावित शोध उद्देश्य निम्नलिखित हैः

- सर्वप्रथम इस शोध का उद्देश्य मतदान-प्रवृत्ति से प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- वे कौन से कारक है, जो महिलाओं के मतदान-प्रवृत्ति को प्रभावित किया है।
- क्या बिहार में महिलाओं की मतदान-प्रवृत्ति पुरूषों की मतदान-प्रवृत्ति भिन्न है।
- क्या पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता के कारण महिलाओं की मतदान-प्रवृत्ति प्रभावित हो रही है?
- क्या महिला सशक्तिकरण ने महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति में कोई सकारात्मक परिवर्तन किया है?
- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य लम्बे समय से लंबित महिला आरक्षण विधेयक के मार्ग में बनी बाधाओं का अध्ययन करना।
- क्या बिहार में स्वर्ण जाति, पिछड़े वर्ग एवं दलित वर्ग की महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति में अन्तर?
- सन् **2014** और सन् **2019** के बिहार में लोकसभा निर्वाचन के दोनों निर्वाचनों में महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति में क्या अन्तर रहा और उस के मूल में कौन-कौन से कारक उत्तरदायी रहे?
- महिलाओं के राजनीतिक उत्थान के साथ-साथ उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान हेतु चलाये जा रहे विभिन्न आन्दोलनों का अध्ययन करना।

- महिलाओं की चुनावों में अधिक भागीदारी से क्या चुनाव-परिणाम प्रभावित हो सकते है।
- महिलाओं स्थिति का उनकी मतदान प्रवृत्ति पर कितना प्रभाव पड़ता है?

परिकल्पनाः

शोध कार्य को सही दिशा देने तथा उचित निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पना प्रस्तावित हैः-

- वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में महिलाओं के मतदान-प्रवृति में व्यापक परिवर्तन देखा गया है।
- वर्ष 2019 के सत्रहवीं लोकसभा चुनाव में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व में भी वृद्धि हुई है, इस बदलाव का कारण महिलाओं के मतदान प्रतिशत में वृद्धि है।
- बिहार में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति काफी कमजोर है, इसके बावजूद भी बीते कुछ चुनावों में इनकी राजनीतिक भगीदारी बढी है।
- महिलायें अब केवल घर के कामाज तक सीमित नहीं है, वे विभिन्न सरकारी एवं गै-सरकारी संगठनों में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रही है।

शोध का क्षेत्रः

बिहार राज्य के 40 संसदीय क्षेत्रों में एक संसदीय क्षेत्र पूर्वी चंपारण है, जो पूर्वी चम्पारण जिला के छः विधानसभा क्षेत्रों-हरसिद्धि, गोविन्दगंज, केसरिया, कल्याणपुर, पिपरा-मेहषी तथा मोतिहारी सं मिलकर बना है। यहां कुल मतदाता 14,39,253 में पुरूष मतआताओं की संख्या 7,79,657 एवं महिला मतदाताओं की संख्या 6,59,560 है। इस संसदीय क्षेत्र में हिन्दू मतदाताओं के अलावा मुस्लिम मतदाताओं की भी आबादी अच्छी-खासी है। इस संसदीय क्षेत्र के निवर्तमान सांसद राधा मोहन सिंह भाजपा से निर्वाचित है।

शोध पद्धतिः

यह शोध मुख्यतः अन्वेषणात्मक पद्धति पर आधारित होगा, साथ ही इस में अनुभवमूलक पद्धति का भी सहारा लिया जायेगा। यहाँ, यह भी प्रयास रहेगा कि वर्तमान समय के बदलते सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश ने किस प्रकार मतदान व्यवहार के प्रतिमान में बदलाव लाये हैं, मतदान प्रवृत्तियों में आये परिवर्तनों के कारणों का सूक्ष्म विश्लेषण किया जायेगा। इसे अधिक सटिक और त्रुटिविहिन बनाने हेतु पूर्वी चम्पारण लोक सभा क्षेत्रों का वैयक्तिक अध्ययन **(case study)** किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध-अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों **(Primary source)** के साथ द्वितीय स्रोतों **(Secondary source)** का भी उपयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्रोत के तहत तथ्यों का संकलन साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा एवं द्वितीय स्रोतों के लिए पुस्तकालय, राज्य निर्वाचन आयोग, मुख्य चुनाव अधिकारी का कार्यालय (बिहार), निर्वाचन आयोग (दिल्ली) के अभिलेखों एवं अन्य प्रासंगिक सामग्रियों का अध्ययन किया जायेगा ताकि शोध के निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि **2019** के लोकसभा चुनाव में महिला मतदाता सम्पूर्ण देश के साथ ही पूर्वी चम्पारण लोकसभा सीट पर महलाओं ने कई मुद्दे को लेकर मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है। जिनमें महिलाओं से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण रही है।

सन्दर्भः

1. छिब्बर, प्रदीप एवं वर्मा, रतुल, " बीजेपी हैस जेन्डर प्रॉब्लम्स" इंडियन एक्सप्रेस, **15** मई, **2014**।
2. देशपाण्डेय, राजेश्वरी, "वुमेन्स वोट इन **2014**" द हिन्दू, **26** जून, **2014**।
3. यादव, योगेन्द्र, "अन्डरस्टैन्डिग द सेकेण्ड डेमोक्रेटिक अपर्ग" ट्रान्सफॉर्मिंग इंडिया, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, **2000**।
4. कपुर, देवेश एण्ड वैशनव मिलन, " कॉस्ट ऑफ डेमोक्रेसीः पॉलिटिकल फायनांस इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, **2018**।
5. कुमार, शक्ति शेखर, " जनरल इलेक्शन **2019:** व्हाई कांग्रेस हैस नो एलाएन्स पार्टर्न्स इन दिज स्टेट्स" टाइम्स ऑफ इंडिया, **5** अप्रैल, **2019**।
6. सिंह, कुवर, "**15** मिलियन टिनेन्जर्स एण्ड **38,000** ट्रान्सजेन्डर पिपुल्सः हाउ इंडियाज **2019** इलेक्शन आर डिफरेन्ट" क्वार्ट्ज इंडिया, **22** मई, **2019**।
7. वीनर, माइरन "पॉलिटिकल पार्टिसिपेशनः क्राइसिस ऑफ द पॉलिटिकल प्रोसेज प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस , **1971**।
8. कोठारी, रजनी, कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स, ओरिएण्ट लौंगमैन लि०, न्यू दिल्ली, **1985**।
9. के० मित्र, सुब्रत और सिंह, वी० बी०, "भारत में लोकतंत्र व सामाजिक परिवर्तनः राष्ट्रीय मतदाताओं का एक गहन विश्लेषण" नई दिल्ली, सेज प्रकाशन, **1999**।
10. शास्त्री, संदीप, सुरी के० सी० एण्ड यादव, योगेन्द्र, इलेक्टोरल पॉलिटिक्स इन इंडियन स्टेट्सः लोकसभा इलेक्शन इन **2004** एण्ड बियन्ड, न्यू देलही, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, **2009**।
11. रमेश, रणदीप, " इन द इंडियन इलेक्शन, **700** एम वोट्स, **28** डेज, **25000** पुलिसः वर्ल्ड बिगेस्ट डेमोक्रेटिक पॉल्स बिगिन्स" द गार्जियन, लन्दन, **13** जून, **2009**।
12. तिवारी, रूची, "रेड्स गो ऑनलाइन फॉर वोट्स, कैश इन ऑन रन-अप टू 'यंग' पॉल्स, लाइवमिन्ट, **6** फरवरी, **2014**।
13. बालाजी, जे०, "नवीन चावला टेक्स ओवर एज सीईओ" द हिन्दू, चेन्नई, **23** अप्रैल, **2009**।
14. गोवडा, एम० वी० राजीव एण्ड श्रीधरन ई०, रिफॉर्मिंग इंडियाज पार्टी फायनेन्सिंग एण्ड इलेक्शन एक्सपेन्डीचर लॉ" इलेक्शन लॉ जनरलः रूल्स, पॉलिटिक्स एण्ड पॉलिसी, **11 (2), 2012**।
15. स्टेनले, ए० कोचनेक, ब्रिफकेस पॉलिअिक्स इन इंडियाः द कांग्रेस पार्टी एण्ड द बिजनेस एलाइट" एशिएन सर्वे, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, **27(12), 1987**।
16. चटर्जी, पार्थ, स्टेट एण्ड पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू देलही, **1998**।
17. जोशी, अनुराग, पॉलिटिकल थियरी, सोसल साइंस विद्यापीठ, इग्नू, न्यू देलही, **2004**।
18. नारायण, इकबाल, स्टेट पॉलिटिक्स इन इंडिया, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, **1976**।
19. श्रीकांत, " इलेक्शन इन बिहारः कास्ट, वोट लूट एण्ड वायलेन्स, शिक्षा प्रकाशन, पटना, **1995**।